॥ मार आस्तीन ॥

* पहलाभाग *

जिसको

जनाब मुन्शी ज्वालाप्रसाद साहब बर्क़ बी. ए. अडीशनल जज्ज (अवध) वह मुसन्निफ़ माशूक़ा फ़िरङ्ग–फ़ीरोज़गुलनार–आयीलो–रोहनी–मिरनालिनी वग़ैरह ने बाबू बनकमचन्द्र चटरजी के मशहूर नाविल से

" विष वृक्ष "

निहायत फ़सीह और सलीस बामहाविरह उर्दू में तर्जुमा किया

→ पहलीबार ←

लखनऊ

सुपरिण्टेण्डेण्ट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई) के छापेख़ाने में छपा
सन् १९०६ ई०।

क़ीमत ॥।

हक़तसनीफ़...

मार आस्तीन ॥

पहिला परिच्छेद ॥

नगेन्द्रो बाबू बजरेपर सवार जारहे थे-ज्येष्ठ का महीना--आंधियों का ज़माना--उनकी बीबी सूरजमुखी ने चलते वक्त अपने सरकीक़सम दे दी थी देखो होशियारी के साथ जाना--आंधीपानी की आमद देखतेही बजरेको किनारे पर लगाना--तूफ़ान के वक्त बजरे में हरगिज़ न ठहरना--इन सब बातों का वादा करके नगेन्द्रो रवाना हुआ था वरना सूर्यमुखी उस को छोड़ती कब---कलकत्तेका जाना भी ज़रूरी था---बहुतसे काम थे ॥

नगेन्द्रो नाथ एक दौलतमन्द ज़िमींदार

था--वह गोविन्दपूरका रहने वाला जिस ज़िला में वह गांव था उसका असली नाम छिपाकर हम उसे ज़िला हरीपूर कहेंगे--नगेन्द्रो जवान आदमी--कोई ३० वर्ष की उमर--वह अपने बजरे पर जाताथा दो एक दिन बहुत अच्छी तरह गुज़रे--वह दरिया की सैर देखता चला आता था--नदी का पानी बराबर बहता चला जाता है--हवा में नाचता है--धूप में हँसताहै--रोकपर चिल्लाताहै--पानी बेचैन--बेथाह और चंचल--दरिया के किनारे २ मैदानों में चरवाहे मवेशी चराते हैं--कोई पेड़के नीचे बैठाहुआ ताने लगारहा है--कोई चिलम पी रहाहै--कोई रस्सियां बट रहा है--कोई किसी से मारपीट कररहाहै-और कोई चबेना चबा रहाहै-हलवाहे हल चला रहे हैं--बैलों को मारते हैं और चुन २ कर भोंड़ी २ गालियां देते जाते हैं

उन गालियों का कुछ २ हिस्सा बैलों के मालिक को भी मिलता है--घाटों पर किसानों की औरतें घड़े--हांडियां--फटी पुरानी गूदड़ी--सड़ी गली चटाई चांदी का तावीज़--पीतल की चूड़ियां—महीनों का मैला कुचैला कपड़ा—उलझे हुये परे शान बालों के साथ किसी न किसी धंधे में मशगूल हैं—कोई मिट्टी से शिर मलती है--कोई अपने लड़के को मारती है—कोई योंहीं तनहा बैठी हुई किसीको कोसने गालियां देरही है कोई पाटे पर कपड़ा छांट रही है—कहीं २ किसी बड़े गांवके घाटपर शरीफ़ ज़ादियां घाट को रौनक़ देरही हैं--बड़ी बूढ़ियां बकवास में मशगूल हैं—अधेड़ें पूजा पाठ कररही हैं—जवानें घूंघट निकाले गोते लगारही हैं—लड़कों लड़कियों ने गुलमचा रक्खा है—किसीने कीचड़ लगाई--किसीने

दरियासे पूजा के फूल निकाल लिये—किसी ने थप थपाकर पानी की छींटें उड़ाईं किसीने दूसरे पर पानी फेंका—कभी २ किसी आंख बन्दकिये हुये पूजा करनेवाली औरत के सामने से पूजाकी चीज़ें उड़ादीं--ब्राह्मण बगुलाभगत बनेहुये गंगा जीकी तारीफ़ में श्लोक पढ़तेहैं-पूजा करते हैं—और बार २ खुशरू नहाने वालियों की तरफ़ कनखियों से देखते जातेहैं-आसमान पर सफ़ेद २ बादल धूपसे गरमाकर मडलाते हैं—उनके नीचे उड़ती हुई चिड़ियां स्याह नुख़्तों की तरह मालूम होती हैं—नारियल के दरख़्तपर चील बैठी हुई किसी मुल्क के राजमन्त्री की तरह चारों तरफ़ निगाह दौड़ाती है कि किसपर झपट पड़े बगुला छोटे आदमियों की तरह इधर उधर कीचड़ में मारा मारा फिरता है—पनडुब्बी बार २ ग़ोते ल-

गाती है—और चिड़ियां इधर उधर उड़ती फिरती हैं-बाज़ार करनेवाले छोटी २ किस्तियों परतेज जारहे हैं-अपने काम के लिये पार उतारने वाली किस्तियां धीरे२ जातीहैं-पराये काम के लिये-माल लदीहुई किस्तियां बहुत ही आहिस्तह २ जातीहैं—मालिक के काम के लिये ॥

नगेन्द्रो दो एकदिन यह सब हाल देखता हुआ सफ़र करता रहा उसके बाद एक दिन काले काले बादल उठे—बादलों ने आसमान घेर लिया—नदी का पानी स्याह होगया—दरख़्तों की चोटियां स्याही मायलहोगईं--बगुला बादलों की तरफ़ उड़ा--दरिया की रवानी कम होगई—नगेन्द्रो ने मल्लाहोंसे कहा कि किस्ती किनारे लगायें—रहमत मल्लाह उस वक़्त नमाज़ पढ़ता था—कुछ जवाब न दिया-रहमत

ने और कभी मल्लाही न की थी—उसके नाना की ख़ाला एक मल्लाह की लड़की थी—इसी तअल्लुक़ से वह मल्लाह बन बैठा—बातों में वह किसीसे कम न था—नमाज़ ख़त्मकरके बाबू से कहा कि हुज़ूर ख़ौफ़ न करें कोई अन्देशा की बात नहीं—रहमत मल्लाह को इसक़दर हिम्मत इस लिये आगई थी कि किनारा नज़दीक था नाव किनारे लगी-खेनेवालों ने उतरकर एक मेखगाड़ी और नाव बांधदी॥

ग़ालिबन देवताओं को रहमत मल्लाह से कुछ अदावत थी-हवा ज़ोरपकड़गई-पहलेहवा आई-उसने दरख़्तों को खूब पकड़ पकड़ कर झिंझोड़ा--फिर जाकर अपने भाई मेहको बुला लाई-भाई बहिन ने मिलकर बड़ा गड़, बड़ मचा दिया-हवाके कंधोंपर चढ़कर मेह इधर उधर फिरने लगा—दोनों ने दरख़्तों के शिर

झुकादिये-टहने फार डाले—बेलें उतारके फेंकदीं—फूल तोड़डाले—नदी का पानी उछाल २ दिया—तरह २ के उत्पात किया बहिन तो रहमत मल्लाह की टोपीही उड़ालेगई—मगर भाईने बड़ी गुस्ताखी की दाढ़ीको तर बतर कर दिया-बिलकुल शराबोर होगई-बजरा खेनेवालों ने पालों में पनाहली-बाबूने खिड़कियां बन्द करलीं नौकर चाकर असबाब सँभालने लगे॥

नगेन्द्रो बड़ी मुश्किल में पड़गया तूफ़ान के ख़ौफ़से अगर बजरे से उतरता है तो लोग डरपोक ख़्याल करेंगे-अगर नहीं उतरता तो सूर्य्यमुखी से झूठा होता है॥

बाज़ लोग यह कहेंगे कि फिर इसमें हर्ज ही क्या था-हम नहीं जानते-मगर नगेन्द्रो के नज़दीक उसमें ज़रूर ऐब था-इतनेमें रहमत मल्लाह ने कहा कि "हजूर-रस्सियां

पुरानी हैं-न मालूम क्या हो-हवा बड़े ज़ोरों परहै—बजरे से अगर आप उतर चलते तो अच्छा था,,--

नगेन्द्रो उतर आया-

आंधी पानीका ज़ोर--दरिया का किनारा-खुलाहुआ मैदान--भला वहां कब तक खड़ा रहता--शाम होगई—हवा न थँभी—नगेन्द्रो एक गांवकी तरफ़ चला—गांव किसी क़दर फ़ासिले पर था—नगेन्द्रो कीचड़ में लतपत पापियादह—बारिश बन्द होगई धीरेधीरे हवा का भी ज़ोर घटा—मगर आसमान पर बादल घटाटोप छायेहुये थे—यह अन्देशा था कि रातको फिर आंधी पानी का ज़ोर होगा—नगेन्द्रो गांवकी तरफ़ चलागया—लौटना मुनासिब न था-

आसमान बादलों से ऐसा घिराहुआ था

कि सरे शामही बिलकुल अंधेर घुप होगया--गांव--मकान--मैदान--रास्ता--नदी--कुछ भी नज़र न आता था--हां दरख़्तों पर जुगनुवों की वह कसरत थी कि मालूम होता था छोटे २ हीरे जड़े हैं--काले २ बादलों में बिजुली भी रह रह के चमक उठती थी--औरत ज़ात का गुस्सह एक साथही नहीं ख़त्म होजाता--ठहर २ के जाता है--बारिशसे खुशहो होकर मेंडकोंने भी मलारगाना शुरूकर दिया--दरख़्तों के नीचे पत्तियों से पानी टपकने की टप टप आवाज़ आती थी--किसी तरफ़ पानी में सियारों के चलने की छप छप आवाज़--किसी तरफ़ भीगी हुई चिड़ियों के परों की फड़ फड़ाहट--थोड़ी देर के बाद नगन्द्रो को दूरसे एक चिराग़ की रोशनी दिखाई दी--वह भीगता भागता पानी में शराबोर उधर चला बड़ी मुश्किल से वहां

तक पहुँचा जहां से चिराग़ की रोशनी दिखाई देती थी देखा कि एक पुराने ईंट के बने हुये मकानसे रोशनी आरही है—मकानका दरवाज़ा खुलाहुआ नगेन्द्रो ने नौकरों को बाहर छोड़ा और खुद अन्दर दाख़िल हुआ--देखा कि मकान बिलकुल वीरानहै ॥

दूसरा परिच्छेद ॥

मकान गो कुछ ऐसा छोटा न था मगर उस की मौजूदह हालत निहायत ख़राब थी—सब कमरे टूटे फूटे उजड़े पुजड़े—मालूम होता था कि उसमें कोई आदमी रहताही नहीं—उल्लुओं--चूहों- और तरह २ के कीड़ों मकोड़ों ने उसमें अपना घर करलिया था--एक कमरे में चिराग़ जलता था-नगेन्द्रो उस तरफ़ गया—उस कमरे में दो एक चीज़ें ऐसी थीं जिनसे मालूम

होताथा कि कोई ग़रीब आदमी यहां रहताहै–एक टूटा हुआ चूल्हा–और तीन चार बरतन–दीवारें काली–हर जगह जाला लगाहुआ–मकड़ियां–नेवले–छिपकिलियां–चूहे इधर उधर गस्तमें–एक छोटीसी चारपाई पर एक बूढ़ा आदमी लेटाहुआ–देखने से मालूम होता था कि उसका आख़िरी वक़्त आगयाहै–आंखें गड़हों में घुसीहुईं–सांस तेज़ २–होंठ कांपते हुये–गिरीहुई दीवार की ईंटोंपर एक मिट्टी का चिराग़–मगर उसमें तेल ख़त्म होचुका था–चारपाई पर जो शख़्स पड़ाथा उसकी उम्र के चिराग़ की भी यही हालत थी–चारपाई के पास एक और रोशनी भी थी–यानी एक गोरी चट्टी कमसिन ख़ूबसूरत लड़की—

यातो चिराग़की रोशनी कमथी या वह बूढ़ा और वह लड़की आइन्दह हालत के सोच

में ऐसे फ़िक्र मन्द थे कि नगेन्द्रो को किसीने न देखा–उस बूढ़े ने आख़िरी वक्त में जो जो बातें कीं उनको नगेन्द्रो दरवाज़े के पास खड़ा हुआ सुनतारहा—

मालूमहुआ कि उन दोनों का न कोई यार है न मददगार—

एक वह दिन था कि उनके पास दौलत–असबाब–नौकर चाकर–इज्ज़त–हुर्मत सब कुछ था मगर क़िस्मत ने पलटा जो खाया तो कुछ न रहा-बूढ़े की बीबी ने जब अपने लड़के और लड़की को रोज़ २ मुसीबत में फूलों की तरह कुम्हलाते हुये देखा तो इसी रञ्ज में घुल २ कर पहले तो वह चल बसी–जब चाँद डूब गया तो सितारे भी रफ़्तह २ ग़ायब होगये–

एक लड़का जो मांकी आंखों का तारा और बूढ़े बापका सहारा था वह अपने बापके

जीतेजी दाग़ जुदाई देगया-सिवा इस बूढ़े और इस दुनियां को लुभानेवाली लड़की के कोई न रहा-यह दोनों उस वीराने में रहने लगे दोनों को सिर्फ़ एक दूसरे का सहारा था-**कुन्दन** शादी के क़ाबिल होगई थी मगर अपने बापके लिये बूढ़े की लाठी थी-बूढ़ा जुदा क्योंकर करता-यही सोचता था कि "अभी नहीं कुछ दिनों बाद-अगर **कुन्दन** न हुई तो ज़िन्दगी कैसे बसर होगी-" यह ख़्याल न गुज़रा कि जिसदिन आँख बन्द होजायगी उसदिन **कुन्दन** को किसपर छोड़ जायेगा-आज अकस्मात् दफ़अतन् यमदूत आकर सिरहाने खड़ा होगया-बूढ़ा तो चला **कुन्दन** कल कहां जायेगी-दम निकलतेवक्त बूढ़े को परेशानी हुई-बेनूर आंखों से आंसू जारी थे-सिरहाने की तरफ़ बैठी हुई वह ते-

रह बरसकी लड़की बुत की तरह अपने बाप का मुँह तक रही थी-अपनी हालत को भूले हुये-इससे ग़ाफ़िल कि कल क्याहोगा-रफ़्तह२ बूढ़ेकी ज़बान लड़खड़ानेलगी दमउखड़नेलगा। आंखों की रोशनी जाती रही-रूह दुनियां के झमेलों से निकल भागी—उस वीराने में कुन्दन अपने बापकी लाश को गोद में लिये हुये बैठी रही—रात बिलकुल अंधेरी बाहर कुछ २ बूंदाबांदी भी होती थी—रह रहकर हवा भी ज़ोर से आजाती थी—उस कमरे में टिम टिमाते हुये चिराग़ की धीमी रोशनी कभी मुर्दे के मुंहपर पड़ती थी कभी बिलकुल अंधेरा होता जाता था—तेल तो ख़तमही होचुका था-उसवक्त चिराग़ गुल होगया-नगेन्द्रो दबे पांव उस मकान से बाहर निकल आया--

---

तीसरा परिच्छेद ॥

रात का वक्त और उस उजड़े मकान में कुन्दन और उसकेबापका मुर्दा-कुन्दनने पुकारा "बाबा" कुछ जवाब न मिला—कुन्दन पहिले यह समझी कि सोगये—फिर यह ख्याल आया कि शायद चलबसे—मगर इस बातको ज़बान पर न लासकी—इसके बाद न वह पुकार सकी--न कुछ ख्याल करसकी मुर्देपर एक हाथ से पंखा झलने लगी—बिल आखिर उसने यही फ़ैसला करलिया कि उसका बाप सोगया क्योंकि बापके मरजाने से बेचारी कुन्दन की हालत क्या होती--कई रातोंकी जागीहुई थकी मांदी कुन्दन अपने हाथपर शिर रखकर वहीं ज़मीनपर लेटी और सोगई ॥

उस वक्त कुन्दन ने एक ख्वाब--देखा कि

चांदनी रात है और साफ़ नीलगूं नभमें चाँद का बड़ासा हाला--हालेकीरोशनी निहायत साफ़ और आंखोंको ठण्ढक देनेवाली—मगर उस हालेमें चांद न था—बजायचांदके एक रोशन और चमकती हुई देवीकी मूरत—रफ़्तह २ वह हाला आसमान से ज़मीन कीतरफ़ उतरा और कुन्दन के क़रीब आगया—उसवक्त कुन्दन ने देखा कि उसमें एक हसीन औरत तरह २ के बेशबहा ज़ेवर पहिने हुये मौजूदहै चेहरे पर इनायत व मेहरबानी के आसार नुमायां—होठोंपर मुहब्बत भरी मुसकराहट-कुन्दन ने ग़ौर से जो देखा तो यह पहचानं कर बहुत खुश हुई कि उसकी मां इस सूरत में उसके पास आई है—मां ने बड़ी मुहब्बत से कुन्दन को ज़मीन से उठाकर गोद में ले लिया—बे मांकी बच्ची कुन्दन को बहुत

बहुत दिनोंबाद मांकीगोद नसीब हुई--उसचमकतीहुई मूरतने **कुन्दन** को प्यारकरके कहा--

"बेटी तूने बड़ी तकलीफ़ पाई—मुझे मालूम है कि तुझे और मुसीबतें झेलनी पड़ेंगी—तेरा यह बचपन का ज़माना है—जिस्म भी धान पान-तुझसे वह मुसीबतें बरदास्त न होंगी—तू अब यहां न ठहर—तू इस दुनियां को छोड़ मेरे साथ आ"—कुन्दन ने कहा कि कहां जाना पड़ैगा—उसकी मां ने उंगली के इशारे से रोशन आसमान दिखाकर कहा कि इस देश को **कुन्दन** ने देखा कि अनन्त नक्षत्र लोक बड़े फ़ासले पर हैं—वहां की हालत क्या है इसका भी हाल नहीं मालूम होसक्ता—**कुन्दन** ने कहा-"इतनी दूर न जाया जायगा—मुझसे यह न कहो"—उसकी मां के हँसते हुये चेहरे पर

उदासी सी छागई—किसी क़दर भारी मगर मीठी आवाज़ में कहा "बेटी जो तेरी खुशी हो वह कर—अच्छा तो यही था कि तू मेरे साथ चलती-थोड़े दिनों बाद तू आसमानकी तरफ़ देख२कर वहां जानेकी इच्छा करेगी मैं एकमर्तबा फिर तेरे पास आऊंगी-जब तू ख़ाकपर लोटकर मुझे याद करैगी—मेरे पास आनेकेलिये रोये-गी—तब मैं फिर तुझे मिलूंगी-उसवक्त मेरे साथ चलना-इस वक्त मैं आसमान पर जिस तरफ़ उँगली से इशारह करूं उसतरफ़ देख-मैं तुझे दो इन्सानोंकी सूरतें दिखाऊँगी-वही दोनों इस दुनियां में तेरी बुराई भलाई का बायस होंगे--अगर होसकै तो उनको काला सर्प समझकर उनसे दूर भागना--वह जिस राह चलैं तू उसतरफ़ भूल कर भी नज़र न डाले तो अच्छा"-

यह कहकर उस जगमगातीहुई मूरतने आसमानकी तरफ़ इशारह किया—कुन्दनने देखा कि एक निहायत खूबसूरत मर्द है—हँसती हुई चौड़ी पेशानी—मोहब्बत और हम दर्दीसे भरी हुई आँखें—हंसकीसी सुडौल गर्दन—सूरतमें कोई ऐसी बात न थी जिससे किसी क़िस्म का अन्देशा पैदा होसक्ता—रफ़तह २ वह सूरत ग़ायब होगई—मांनेकुन्दन से कहा कि "इस प्यारी सूरतपर न जाना—अगर यह शख़्स तुम्हारे साथ भलाई भी करेगा तो बुराई पैदा होगी—उससे दूरही रहना अच्छा"—

मांने दुबारा फिर इशारह किया—कुन्दनने फिर देखा—इस मर्तबा मर्द की सूरत न थी—बल्कि एक गन्दुमीरंग खुशचश्म औरत दिखाई पड़ी—मांने कहा कि यह औरत इन्सान की शक्ल में चुड़ैल है—इससेभी दूर दूर भागना—

इन बातों के बादही आसमान पर अँधेरा छागया— पल मारतेही न वह हालाथा न वह सूरत—कुन्दन की भी आंख खुलगई—

चौथा परिच्छेद॥

नगेन्द्रो गांव में जाकर लोगों से मिला उसकी कोशिश और मदद से गांववालों ने आकर लाश को गङ्गा लेजाने का इन्तिज़ाम किया—एक पड़ोसकी औरत कुन्दन के पास रही—जब कुन्दन ने देखा कि लोग उसके बाप को लिये जाते हैं तो उसे यक़ीन होगया कि वह मरगया— उसने रोना शुरू करदिया—

सुबह होते पड़ोसकी औरत अपने घर चलीगई—वहांसे अपनी लड़की चम्पा को कुन्दन की तसल्ली के लिये भेज दिया—दोनों लड़कियां हमसिन और साथकी खेलीहुई—

चम्पा इधर उधरकी बातों से कुन्दन का जी बहलाने की फिकिर करती थी—कुन्दन ने एक भी न सुनी—बराबर रोती रही—हां अक्सर औक़ात आसमान की तरफ़ देखलेती थी—चम्पा को तअज्जुब हुआ—पूछने लगी कि बार बार आसमान की तरफ़ क्यों तकती है—कुन्दन ने कहा "कल आसमान से मां आईथीं—मुझसे कहा कि मेरे साथ चल—मेरी समझ पर कुछ ऐसे पत्थर पड़गये कि मैं न गई—अब रह रहकर सोचती हूँ कि क्यों न चली गई—फिर अगर मां आये तो मैं ज़रूर उनके साथ चली जाऊँ—इसी लिये बारबार आसमान की तरफ़ तकतीहूँ"—

चम्पा बोली—"वाह कहीं मरकर भी कोई फिर आताहै"—

कुन्दन ने अपने स्वप्न का सारा हाल

बयान किया—चम्पा ने अचम्भेमें आकर पूछा कि जो औरत और मर्द दिखाई पड़े थे उनको पहचानती हो—कुन्दन ने कहा "नहीं—मैंने उन्हें और कभी नहीं देखा—उस मर्दकीसी अच्छी सूरत तो कभी किसीकी नहीं देखी—

इधर नगेन्द्रो ने सुबह उठकर गांव वालों को बुलाया और उन से पूछा कि इस बूढ़े की लड़की अब क्या करेगी—कहां रहेगी—इसका कोई वाली वारिशहै या नहीं—सब ने जवाब दिया—कि इसका कहीं ठिकाना नहीं—

नगेन्द्रो ने कहा—"तो तुम में से कोई शख़्स उसको अपने साथ रखकर परवरिशकरे-मैं उसकी शादी करादूँगा—जब तक शादी न हो उस वक़्त तक मैं उसके गुज़ारे के लिये कुछ मुक़र्रर करदूंगा—और महीने महीने भेजता जाऊँगा,,—

अगर नगेन्द्रो नक़द रूपया उस वक्त दे देता तो बहुतसे लोग राज़ी होजाते—नगेन्द्रो के चलेजाने पर कुन्दन को यातो निकालदेते या उससे ख़िदमत कराते—मगर नगेन्द्रो ऐसा बेवकूफ़ न था जब लोगोंने नक़द रूपया न देखा तो किसी ने उसकी बात का इतबार न किया—

नगेन्द्रो को फ़िक्र मन्द देखकर एक शख़्स ने कहा—"कलकत्ते के मुहल्लह श्याम बाज़ार में इसकी ख़ाला रहती है—ख़ालू का नाम बिनोद घोश—आप कलकत्ते जातेहैं इसको भी साथ ले जाकर वहां पहुँचा दीजिये—आपकी बदौलत एक ग़रीब कायस्थ की लड़की का काम बन जायगा,,—

आख़िरस नगेन्द्रो ने इस बातको मंज़ूर किया—आदमी भेजकर कुन्दन को बुलवाया—

चम्पा कुन्दन को अपने साथ लेकर आई-कुन्दन ने दूरसे नगेन्द्रोको जो देखा तो जहां की तहां खड़ी रहगई—आगे कदम न बढ़ा-अचम्भेमें आकर नगेन्द्रोका मुँह देखरहीथी—

चम्पा बोली-"यह क्यों ठिठक रही—"

कुन्दनने उँगलीके इशारेसे दिखाकर "कहा-यह वही हैं"—

चम्पा वही कौन ?

कुन्दन—जिसको मां ने कल आसमान में दिखायाथा—

चम्पा को भी अचम्भा हुआ—लड़कियों को ठिठकते हुये देखकर नगेन्द्रो खुद उनके पास चला आया और कुन्दन से सारा हाल बयान करदिया—कुन्दन ने कुछ जवाब न दिया मगर तअज्जुब की निगाहों से नगेन्द्रो को देखती रही—

पाचवां परिच्छेद ॥

नगेन्द्रो कुन्दन को अपने साथ कलकत्ते लेगया वहां उसके ख़ालू को बहुत तलाश किया मगर पता न चला उस नाम का एक शख़्स मिला मगर उस ने रिश्तहदारी से इन्कार किया.—नतीजा यह हुआ कि कुन्दन नगेन्द्रो के गलेपड़ी—

नगेन्द्रो की एक छोटी बहिन कमला नामी कलकत्ते में श्रीसचन्द मित्रको ब्याही थी—श्रीसचन्दबाबू एक तिजारती कारख़ाने के मुन्तज़िम थे—नगेन्द्रो कुन्दन को वहीं ले गया—कमला को बुलाकर उससे कुन्दन की कैफ़ियत बयान करदी—

कमला की उमर कोई १८ वर्ष की थी—चेहरेकी बनावट नगेन्द्रो की तरह भाई बहिन

दोनों परम सुन्दर थे—कमला की तालीम भी बहुत अच्छी हुई थी—नगेन्द्रो के बाप ने कमला और सूरजमुखी को एक निहायत लायक़ औरत से पढ़वाया था—कमला का ससुर ज़िन्दह था—मगर वह अपने गांव पर रहा करता था—कलकत्ते में घर का सारा इन्तिज़ाम कमलाही के सिपुर्द था—

नगेन्द्रो ने कमला से कुन्दन का हाल बयान करके कहा कि अगर इसको तुम अपने यहां न रक्खोगी तो और कहीं इसका ठिकाना नहीं—फिर जब मैं घर जाऊंगा तो इस को गोविन्दपूर लेता जाऊंगा—

कमला बड़ी शरीर थी—जैसेही यह बातें कहकर नगेन्द्रो घरसे बाहर गया वैसेही उसने कुन्दन को पकड़ कर गोदमें उठालिया और लेजाकर एक गरम पानी से भरेहुये टब में डाल

दिया—कुन्दन बहुत घबड़ाई—कमला ने हँस हँसकर खुशबूदार साबुन लगाया और कुन्दन का जिस्म धोने लगी—यह देखकर एक चाकरनी दौड़ी हुई आई और कहने लगी कि मुझे दो मैं साबुन लगादूं—कमला ने उसी गर्म २ पानी को चुल्लू में लेकर उस चाकरनी पर फेंकमारा वह भाग खड़ी हुई—

कमला ने कुन्दन का बदन मल मल कर उसे नहलाया—नहाने से कुन्दन के जिस्म पर ऐसी रौनक़ आगई गोया ओस से धोया हुआ कमल का फूलहै—कमला ने अच्छे २ कपड़े पहनाये—खुशबूदार तेललगाकर शिरके बाल गूंधे—और थोड़ा बहुत ज़ेवर पहनाकर कहने लगी—

"जा—अब जाकर दादा बाबू को प्रणाम कर—और देख कहीं इस घरके बाबू को प्रणाम

न करलेना—अगर वह तुझे देखपायेंगे फ़ौरन् तुझसे ब्याह करलेंगे—"

नगेन्द्रो ने कुन्दन का सब हाल सूरज मुखी को लिख भेजा—नगेन्द्रो का दोस्त हरदेव नामी कहीं पर देश में था उनको ख़त लिखते वक्त कुन्दन का भी ज़िक्र लिखा--वह यह था--

"अच्छा बताओ तो--औरत किस उम्र में ज़्यादह सुन्दरी होतीहै—तुम कहोगे कि चालीस बरस की उमरमें—क्योंकि तुम्हारी बीबी की उमर चालीस से भी दो एक साल ज़्यादह होगी--जिस कुन्दन का मैंने ज़िक्र कियाहै वह तेरह बरस कीहै--उसको देखकर यह यक़ीन होताहै कि सुन्दरता के लिये उमर मुनासिब यहीहै—भरी जवानी के पहिले सादगी और भोलेपन में ख़ास लुत्फ़है--जो बाद को

ज़ाता रहताहै--कुन्दन में चमत्कार भोलापन है--वह कुछभी नहीं समझती--अभीतक पास पड़ोस के लड़के लड़कियों के साथ खेलने कूदने के लिये तय्यार होजातीहै--अगर टोक दो तो सहमी हुई घर पलट जातीहै--कमला उसे लिखना पढ़ना सिखलाती है--कमला की ज़बानी मालूमहुआ किजो बात बताई जाती है उसे बहुत जल्द सीख लेतीहै--मगर और कोई बात नहीं समझती--हां कभी २ उसकी भोली २ प्यारी २ निगाहें मेरे ऊपर ज़रूर पड़ती हैं--मगर मुँहसे कुछ नहीं कहती--उन आंखों को देखकर मुझपर एक बिमोहनीसी छाजातीहै--यह बातें सुनकर तुम मेरी बेअक़ली पर हँसोगे हां--भाई--हँसलो--नज़लेके वजह से तुम्हारे किसीक़दर बाल क्या सफ़ेद होगये कि तुमको मेरे हँसने का परवाना हासिल होगया--ले-

किन अगर वह आँखें तुम देखलेते और फिर तुम्हारी अक़्ल ठिकाने रहती तो मैं क़सूर वार था—मेरी समझ में नहीं आता कि उन आंखों में क्या जादू भराहै—वह आँखें इस दुनिया की नहीं मालूम होतीं—दुनिया की चीज़ों पर योंही उचटी हुई निगाहें पड़ती हैं—मगर दरअसिल न मालूम किसको ढूंढ़ती हैं मैं यह नहीं कहसक्ता कि कुन्दन की सुन्दरता में कोई ऐब नहीं—मगर मैंने आज तक ऐसी सुन्दरी नहीं देखी—ऐसा मालूम होताहै कि वह इस दुनिया से निरालीहै—रक्त मांस से नहीं बनी—गोया उसका जिस्म चाँद की किरनों या फूलोंकी खुशबू से बना है—कोई सामग्री ऐसी नहीं मालूम होती जिससे उसे मिशाल दूँ—किसी तालाब के साफ़ सफ़्फ़ाफ़ पानी में सर्दी के मौसम की चांद की किरणें

जो लुत्फ़ पैदा करदेती हैं शायद उसके ख़्याल करने से **कुन्दन** की सूरत का कुछ २ अन्दाज़ह मिल सकै—और तो कोई चीज़ ऐसी नहीं पाता जिससे मिसाल दूं"—

नगेन्द्रो ने जो ख़त सूरजमुखी को लिखा था उसका जवाब कुछ दिनों बाद आया–उस में लिखा था–

"मेरी समझ में नहीं आता कि मैंने कौनसा क़ुसूर किया—अगर इतने दिनों कलकत्ते रहना था तो मुझे ख़िदमत के लिये क्यों न बुलाया—इजाज़त की देर है—इशारह पातेही फ़ौरन पहुँचूं"–

एक कमसिन छोकरी क्या पागये कि मुझे भुलादिया–बहुतसी चीज़ें जबतक कच्ची रहती हैं उनकी बहुत आवभगत होती है—कच्चे नारियलही का दूध बहुत ठण्ढा होता है—

शायद यही हालत कमबख़्त औरतों की है—नहीं तो उस छोकरी को पाकर मुझे क्यों भुला देते—

ख़ैर यह तो मज़ाक़ था—सच २ बताओ क्या तुमने वह छोकरी कमला को देही डाली—मैं इस फिकर में थी कि उसको तुम से मांग लूं—मुझे एक लड़की की ज़रूरत है—अगर तुम्हें कोई चीज़ मिलजाये तो उसपर मेरा अख़्तियार होना मुनासिबथा—मगर आजकल मैं देखती हूँ कि तुम्हारी बहिनका अख़्तियार होगया—

लड़की को लेकर मैं क्या करूंगी? ताराचरन से शादी करदूँगी—मुझे बहुत दिनों से फ़िक्र है कि कोई अच्छी लड़की मिलजाय तो ताराचरन का ब्याह करदूं—अगर कमला छोड़दे तो कुन्दनको आते वक़्त अपनेसाथ लेते

आना---मैंने कमला को भी लिखभेजा है---मैं शादी के लिये गहना पाता तय्यार कररही हूँ---देखो अब कलकत्तेमें बहुत दिनों न ठहरना---वहां छः महीने के बाद आदमी मेढा होजाताहै---हां अगर कुन्दनसे शादी करलेने का इरादा किया हो तो वैसा कहो–मैं मंडवा तय्यार कर रक्खूं–"

ताराचरन कौन है इसका हाल हम आइन्दह बयान करेंगे---बहरहाल सूरजमुखी की तजवीज़ को कमला और नगेन्द्रो दोनों ने मंज़ूर किया---जब नगेन्द्रो वापसगया तो कुन्दन उसके साथ गोविन्दपूर गई–"

कुन्दन उस स्वप्नको क़रीब क़रीब भूलगई थी–इस सफ़र में एक मर्तबा उसको ख़्याल आया मगर नगेन्द्रो की नेकियां और अच्छे तरीक़े देखकर हरगिज़ इस बात का यक़ीन

न हुआ कि उससे कोई तक़लीफ़ पहुँचेगी— इसी तरह अक्सर मनुष्य जानबूझकर पतङ्गे की तरह जलतीहुई आगमें घुस पड़ते हैं—"

छठा परिच्छेद

कालीदास कवि को एक मालिन फूल दे जाया करती थी—कालीदास थे भूखे ब्राह्मण— फूलों की क़ीमत कहांसे देते उसके बदले में कभी कभी उसे अपनी काव्य सुना दिया करते थे— एक रोज़ वह मालिन एक बहुतबड़ा और खुश-नुमा कमलका फूललाई—कालीदासने खुशहो-कर उसको अपनी किताब मेघदूत सुनानी शुरू की—मेघदूत यों तो बहुतबड़े रसकी किताब है— मगर शुरूमें मज़ेदार बातें कमहैं मालिनको जब लुत्फ़ न आया तो उठकर जाने के लिये तय्यार हुई—कालीदास ने पूछा कि क्यों चल क्यों दी—

मालिन—इस कविता में कुछ मज़ा नहीं आता—

कालीदास—तो तुम्हें स्वर्ग लोक कभी नसीब न होगा—"

मालिन क्यों?

कालीदास लाखों ज़ीने तै करके मनुष्य स्वर्ग लोक में पहुँचता है—उसीतरह यह किताब भी स्वर्ग है—मगर शुरू में थोड़े से ज़ीने हैं अगर ज़ीने तै नकरोगी तो स्वर्ग लोकका मज़ा क्या ख़ाक़ उठाओगी—"

मालिन घबराई कि कहीं इनकी बदुआ से नर्क नजाना पड़े—बैठगई और शुरू से आख़िर तक वह किताब सुनी फिर तो ऐसी ख़ुश हुई कि दूसरे रोज़ कालीदास के लिये बहुत ही ख़ुशनुमा फूलों का हार बनालाई—

हमारी यह तसनीफ़ नतो स्वर्गहै न इसके लिये लाखों जीने हैं—इसमें मज़ा भी कम है

और इसके ज़ीने भी कम—यह दो चार रूखे फीके परिच्छेद इसकी सीढ़ियां हैं—अगर पाठकों में कोई साहब उस मालिन की तरह हों तो उनको मैं आगाह किये देता हूं कि बग़ैर उन सीढ़ियों को तै किये हुये वह मज़ा नहीं उठा सके—

सूरजमुखी का बाप कलकत्ते की एक कोठी में ख़ज़ाञ्ची था—सूरजमुखी उसकी इकलौती बेटी थी—

श्रीमती नामी एक कायस्थ बिधवा उस घरमें दासी का काम करती थी—सूरजमुखी को उसीने पाला पोसा था—ताराचरन उस का लड़का था—सूरजमुखी और ताराचरन की हमसिनी थी—दोनों एक साथ भाई बहिन की तरह खेला कूदा करते थे—श्रीमती थी औरत सूरत दार किसी के साथ निकलगई—

पता भी न चला कि कहां गई और किधरगई–

तारा चरन की बेबशी पर सूरजमुखी के बाप को तरस आया–उन्हों ने उसकी परवरिश अपने लड़के की तरह की उससे ख़िदमत का काम न लिया–बल्कि लिखाने पढ़ाने की कोशिश की ताराचरन एक स्कूल में भरती होकर अँगरेज़ी पढ़ने लगा–

उसके बाद सूरजमुखी का ब्याह हुआ–ब्याह के कईसाल बाद सूरजमुखी के बाप ने वफ़ात पाई उस वक़्त ताराचरन कुछ टूटी फूटी अँगरेज़ी सीख चुका था मगर अंगरेज़ी में कोई काम न करसक्ताथा–जब ताराचरन का कोई परवरिश करनेवाला न रहा तो वह सूरजमुखी के पास चला गया सूरजमुखी ने नगेन्द्रो से कहकर उसगांवमें एक छोटासा स्कूल क़ायम कराया–और ताराचरन उसका

मास्टर मुक़र्रर हुआ–अंधों में काने राजा–देहात के जाहिलों में **ताराचरन** भी लायक़ मशहूर हुआ–क़रीब के एक मौज़ा देवीपूर में एक नौजवान ज़िमीदार देवेन्द्रो बाबू ने ब्रह्मो समाज क़ायम किया था–**ताराचरन** भी उस में शरीक़ हुआ–समाज में जाकर विधवा बिवाह और स्त्री शिक्षा के लिये और मूर्त्ती पूजन के खण्डन में अक्सर लेक्चर दिया करता था– कहा करता था कि "तुम लोग कंकड़ पत्थर का पूजना छोड़ दो–बिधवा बिवाह करो–और स्त्रियोंको पढ़ाओ–उनको पिंजड़े में क्यों बन्द रखते हो बाहर निकालो"–

औरतों को इसक़दर आज़ादी देने पर **ताराचरन** इसलिये और भी ज़ोर दिया करता था कि ख़ास उसके घरमें कोई औरत न थी–अभीतक उसकी शादी नहीं हुई थी–सूरज-

मुखी को फिक्र थी मगर कोई अच्छी लड़की न मिली—ऐसी वैसी जगह शादी करदेने पर वह राज़ी न हुई क्योंकि वह ताराचरन को भाई की तरह मानती थी—किसी छोटे घरकी लड़की को वह भावज क्योंकर कहती—अलावह इसके लोगों में ताराचरन की मां के निकल जाने का हाल भी मशहूर होचुकाथा—शरीफ़ ख़ान्दानवाले उसके साथ अपनी लड़की ब्याहने के लिये राज़ी न होतेथे—इसी जमाने में नगेन्द्रो के ख़त से कुन्दन का हाल मालूम हुआ—और उसके साथ ताराचरन की शादी की तजवीज़ हुई—

सातवां परिच्छेद

कुन्दन नगेन्द्रोके साथ गोविन्दपूर आई—नगेन्द्रो का घर देखकर कुन्दन को बड़ा ता-

ज्जुब हुआ—इतनाबड़ा घर उसने कभी काहे को देखाथा—तीन महल मर्दानेमें—तीन महल ज़नानेमें—एक२महल—एक २ मुहल्ले के बराबर—सदर महलमें लोहेका बड़ाफाटक—नफ़ीस पाईं—बाग़ बड़ासा आलीशानपुर तकल्लुफ़ सजाहुआ बैठका—बहुतसे कमरे—सबमें संगमरमर का फ़र्श—दूसरे महलमें एकतरफ दफ़्तर और दूसरी तरफ़ तोशेख़ाने के मकानात—तीसरे महल में देवस्थान—ठाकुरद्वारा—जहां सैकड़ों हज़ारों पण्डित—ब्रह्मचारी—संन्यासी—वैष्णवी खाना पाते थे— और पूजापाठ किया करते थे—

ज़नाने महलोंमें एक महल ख़ास नगेन्द्रो और सूरजमुखी केलिये—दूसरा मकान औरतों के पूजा पाठकेलिये—तीसरे मकानमें रिस्ते नाते कीऔरतें—ख़ाला—ख़ालाकीबहिन—मुमानी मु-

मानीकी बेवा बहिन—ख़ाला के भाई की बीबी—मुमानी की बहिनकी लड़की—वग़ैरह२का बड़ा हुल्लड़ रहा करता था—इस मकान में रातदिन काँव २ हुआकरती थी—कहीं हँसी मज़ाक़—कहीं लड़ाई झगड़ा—कहीं गाली गलौज—कहीं बहसा बहसी—कोई किसीको वलहना देतीहै—कोई किसीपर आवाज़ कसतीहै—किसीका बच्चा रोताहै—किसीका बच्चा खिल खिलाता है—हर तरफ़से इस क़िस्म की आवाजें आरही हैं—"पानीलाओ"-"कपड़ेपहिनाओ"—"खानेमेंदेर क्यों हुई"—"दूध कहांहै"—"दूध में शक्कर क्यों नहीं"— "आज लड़का खातानहीं"—वग़ैरह२-इसी मकानसे मिलाहुआ रसोईका घर—वहां औरभी धूम धामथी—कोई खाना पकानेवाली चूल्हे के नीचे आंचकरके पड़ोसिनसे लड़के की शादी तै कररही है—गीली लकड़ियोंकी वजह

से किसी की आँखोंमें धुवाँ जो लगा तो उस ने गुमास्तेको सलवातें सुनाना शुरूकीं—मछलियाँ तलतेहुये किसीके ऊपर गरम २ तेलकी छीटें जो पड़ीं तो वह बड़ बड़ाकर अपने बदन को सहलाती जातीहै—कोईचावल धोतीहै—कोई दाल चलातीहै—किसीतरफ़ एकगरोहका गरोह बैठाहुआ तरकारियां काटरहाहै—और सारी दुनियाकी खुराफ़ात बातें होतीजातीहैं—गुलाब थोड़े से सिनमें रांडहोगई—चन्दो का शौहर बड़ा शराबीहै—गोपाली के दामादको अच्छी नौकरी मिलगई—पार्वती का लड़का बड़ा शरीर है—मालिनकी लड़की रामलाल से फँसगई—चम्पा की लड़की जवान होगई मगर अभी तक शादी नहींहुई—अंगरेज़ों के नाखूनों में ज़हर होताहै इसलिये हाथसे नहींखाते—बस ऐसी ही बातें हुआकरती थीं इन महलों के पुश्तपर

फूलोंका बाग़ीचा–जिसके चारों तरफ़ ऊंची२ अहातेकी दीवारें हैं–बीचमें खुशनुमा तालाब–ज़नाने महलोंसे इस बाग़ीचे कीतरफ़ खिड़कियां लगीहुई थीं—

इन सब महलों से अलाहिदह अस्तबल–फ़ीलख़ाना–शुतरख़ाना–चिड़ियाख़ाना वग़ैरह २—

कुन्दन पालकीपर सवार ज़नानेमें दाख़िल हुई–उतरकर **सूरजमुखी** को प्रणाम किया–उसने दुआदी–जब कुन्दनने **नगेन्द्र** को वह मर्द पाया जिसको स्वप्न में देखाथा–तो कुदरती तौरपर उसके दिलमें आयाथा कि उनकी बीबी वह औरत होगी जो स्वप्नमें नज़र आई थी–मगर **सूरजमुखी** को देखकर वह शक रफ़ा होगया–उस औरतका रंग गन्दुमी था–**सूरजमुखी** गोरीचिट्टी–वह औरत ख़ूबसूरत

ज़रूरथी मगर सूरजमुखीका सुन्दरापा उससे बहुत बढ़ाहुआ था—वह औरत कोई २० बरस की होगी और सूरजमुखीका छब्बीसवां साल था—दोनोंमें कोई निस्बतही न थी—

सूरजमुखी ने कुन्दन की बहुत कुछ आवभगत की—एक ख़ास दासीको हुक्म दिया कि "कुन्दन के साथमें ताराचरन का ब्याह करूँगी—उसकी ख़ातिर मदारात उसीतरह हो कि गोया वह मेरी भावज है"—दासी ख़ादिमा ने कहा बहुत अच्छा—वह कुन्दन को अपने साथ उस कमरे में लेगई जो उसकेलिये तजवीज़ हुआथा—कुन्दन ने अबतक इस औरत की सूरत अच्छीतरह न देखीथी—उसने कमरे में पहुँचकर उसका चेहरा देखकर कुन्दन का रंग फ़क होगया—जिस औरतको स्वप्नमें देखा यह वही औरत है—

कुन्दनने घबड़ाकर पूछा "तुम कौनहो"?–
"दासीने जवाब दिया मुझे हीरा कहतेहैं"–

आठवां परिच्छेद।

इस मौक़ेपर पाठक ज़रूर ख़फ़ा होंगे–क़िस्सानवीसों का आम तरीक़ा है कि शादी आख़िरमें हो–और हम शुरूहीमें कुन्दन का ब्याह किये देतेहैं–यहभी पुराना तरीक़ाहै कि माशूक़ा की शादी जिस शख़्स के साथ होतीहै वह निहायतही खबसूरत होताहै–हर सिफ़त से मौसूफ़ आला दर्जेका बहादुर और उस माशक़ापर हज़ार जानसे आशिक–बेचारे ताराचरन–मेंतो इनमेंसे कोईभी सिफ़त नहीं–ख़ूबसूरती में उसका सौंलाया हुआ रंग और चपटी नाक–दिलेरी सिर्फ़ स्कूल के लड़कों तक महदूद थी–रहा कुन्दन से इश्क–इसका

हाल हम नहीं जानते—हां एक पालूबंदरिया से इसको किसीक़दर मुहब्बत थी—

बहरहाल कुन्दन की शादी ताराचरन के साथ होगई—ताराचरन उस सुन्दरीको अपने घर लेगया—खूबसूरत जोरू पाकर ताराचरन एक मुशकिल में पड़गया—देवेन्द्रो बाबूके मकानपर ताराचरन अक्सर लेक्चर दिया करताथा कि औरतोंको परदे में न रखना चाहिये—अगर उसकी शादीहुई तो वह अपनी बीबीको सबके सामने निकालकर रिफ़ार्म की मिशाल क़ायम करैगा—अब तो शादीभी होगई उसकी बीबीके सुन्दरापे के चरचेभी लोगोंमें होतेथे—सबने ताराचरन को घेरना शुरूअ किया कि बीबीको बाहर निकालो—देवेन्द्रो ने इसक़दर परेशान किया कि ताराचरन को वादह करलेना पड़ा कि वह अपनी बीबी

को उनके सामने निकालैगा—ताराचरन को बड़ा ख़ौफ़ सूरजमुखी का था कि अगर सुन पायेगी तो बेहद नाराज़ होगी—एक सालतक तो ताराचरन टाल लेगया—जब देवेन्द्रो ने बहुत सताया तो कुन्दन को सूरजमुखी के घर इस बहानेसे भेजदिया कि वह अपने घर की मरम्मत करायेगा थोड़े दिनोंमें मरम्मतभी ख़त्म होगई—कुन्दन फ़िर पलट आई—अब क्या बहाना करें—मजबूर होकर एक रोज़ कुन्दन को देवेन्द्रो के सामने लाकर खड़ा कर दिया—कुन्दन थोड़ी देर घूंघट निकाले खड़ी रही—फिर रोतीहुई अन्दर चलीगई—मगर देवेन्द्रो का काम तमाम होगया—वह ऐसी सुन्दरीको भूल न सका—

थोड़े दिनोंबाद देवेन्द्रो के मकान में कोई तक़रीब हुई—कुन्दन का भी बुलावा आया—

सूरजमुखीने जानेके लिये मनाकिया—कुन्दन उस तक़रीब में न गई—

एक मर्तबा और देवेन्द्रो के सामने कुन्दन बोलाई गई—सूरजमुखी ने जब सुना तो ताराचरन को बहुत कुछ सख्त सुस्त कहा—उसके बाद देवेन्द्रो को कुन्दन की सूरत देखने को न मिली—

शादी को तीन बरस गुज़रे थे कि कुन्दन राँड़ होगई—ताराचरन ने बोख़ारके मर्ज़ में वफ़ात पाई—सूरजमुखी ने कुन्दन को अपने घर बुलालिया—आस्तीनमें सांपपाला—ताराचरन का मकान बेंचकर उसका रुपया कुन्दन के नाम जमा करादिया—

नवां परिच्छेद।

कुन्दन नगेन्द्रो के घरमें रहा करती थी—

जिस मकान में नगेन्द्रो के नाते कुनबे की औ-रतें रहती थीं—वहां एक रोज़ दोपहरके बाद सब औरतें अपने २ धन्धों में मशगूलथीं किसी के बालगूंधे जाते थे—किसी की मांग निकाली जाती थी—कोई सफ़ेद बाल चुनवाती थी—कोई बालोंमें तेलडालती थी—कोई अपने बच्चे को खिलाती थी— कोई दूध पिलाती थी—कोई अपनी गुइयां से अपने शौहर की बातें करती थी—कोई अपने शौहर के फिराक़ में ठण्डी सांसें लेती थी—कोई सूरजमुखी और नगेन्द्रो की बुराइयां करती थी—कोई अपने पड़ोसियों के ऐब निकालती थी—अप-नी २ तारीफ़ सब औरतें करती थीं—जो औ-रत किसी फूहड़ पनेके लिये झिड़की गई थी वह अपनी अक़लमन्दी की तारीफ़ करती थी—जिसके खाने में नमक ठीक कभी न होता था

वह खाना पकाने में अपनी उस्तादी बघारती थी—कोई अपने जाहिल शौहर की लियाक़त के क़िस्से बयान करती थी—कोई अपने बद-शक्ल बच्चे के हुस्न की तारीफ़में मशगूल थी बड़ी बूढ़ियां बाबा आदमके ज़माने के क़िस्से कहती थीं—बच्चे दौड़धूप मारपीट—रोने धोने में मसरूफ़ थे—सूरजमुखी इस मजमे में न थी—वह वहां जाती भी कम थी—मगर कुन्दन अक्सर अपना वक़्त वहीं काटती थी—इसवक़्त भी मौजूदथी—एक बच्चे को कुछ पढ़ारही थी—कि इतने में "जैराधे" कहती हुई एक योगिन वहां दाख़िल हुई—ज़नाने महलात में जो मकान पूजा का था वहां बहुतसी औरतों को खाना तक़सीम हुआ करता था—मगर और ज़नाने मकानों में किसी औरतके जाने की इजाज़त न थी जब यह योगिन वहां

पहुँची तो दासियों ने टोका—मगर जब उसकी सूरत देखी तो सबको अचम्भा सा होगया-किसी ने कुछ न कहा—जोगिनपर जवानी फटी पड़ती थी—कुन्दन के सिवा और कोई औरत वहां ऐसी हसीन तरहदार न थी—फूलकी तरह खिलाहुआ चेहरा—सुर्ख़ २ होंठ साफ़ और रोशन आँखें—चमकते हुये सुडौल गालयों—देखने में निहायत ख़ूबसूरत—हां अगर कोई निगाहबाज़ ग़ौरसे देखता तो यह ज़रूर कहता कि बदनकी बनावट और पांवकी हरकत में मर्दानापन पाया जाता है—

एक औरत ने जोगिन से पूछा कि तुम कौन हो—

जोगिन बोली—"मेरा नाम हरी दासी—कहो तो ख़ंजरी पर कुछ गाना सुनाऊँ"—

"हां हां सुनाओ"की आवाज़ हर तरफ़ से

आई–जोगिन जाकर कुन्दन के क़रीब बैठ गई जोगिन ने सबकी तरफ़ मुख़ातिब होकर पूछा कि क्या गाऊँ–तरह २ की फ़रमायशें होने लगीं–

जोगिन ने कुन्दन की तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा "तुमने कोई फ़रमाइश न की"–कुन्दन कुछ झेंपकर मुसकराई–जवाब न दिया–एक औरत जो पास बैठी थी उससे कहा कि भजन गवाओ–जोगिन ने भजन गाना शुरू किया–कुन्दन और भी शरमाई क्योंकि योगिन ने सबका कहना टालकर कुन्दन ही की फ़रमाइश पूरी की–जोगिन ने वह भजन गाया जिसमें श्रीकृष्णजी राधिका के फ़िराक़ में अपनी बेचैनी ज़ाहिर करते हैं––

जब गाना ख़त्म हुआ तो जोगिनने कुन्दन

की तरफ़ देखकर कहा कि गानेसे गला सूख गया थोड़ा पानी पिलाओ--

कुन्दन एक गिलाश में पानी लेआई-जोगिनने कहा "मैं तुम्हारा गिलाश नहीं छू सक्ती चलकर मुझे चुल्लू से पिलादो"—

यहकहकर जोगिन उसतरफ़ गई जिधर पानी फेंकनेकी जगहथी-जहां सब औरतें बैठी थीं वहां से यह मुक़ाम किसी क़दर हटकरथा-कुन्दन भी उसके पीछे २ पानीलेकर गई-जोगिन हाथ मुँह धोने लगी-हाथ मुँह धोते धोते चुपके २ पूछा-"क्या कुन्दन तुम्हाराही नाम है"--

कुन्दन अचम्भे में आकर पूछा "क्यों"-

जोगिन-तुमने कभी अपनी सास को देखा है—

कुन्दन-नहीं—

कुन्दन ने भी यह हाल सुनाथा कि उस की सास बदराह होकर निलकगई थी —

जोगिन—तुम्हारी सास यहां आईहै—मेरे घरपरहै—वह तुम्हारे देखने के लिये इतना रोतीहै कि जिसकी हदनहीं—हज़ारहो मगर है तो फिर सासही वह यहां सूरजमुखी को मुँह नहीं दिखासक्की— न हो चलकर तुम्हीं देख आओ—कुन्दन—मैं बग़ैर सूरजमुखी के पूछे नहीं जासक्की—

जोगिन—उनसे कहीं ज़िक्रभी न करना—अगर उन्होंने सुनकर बोलाया तो तुम्हारी सास फिर यहां ठहरेगी भी नहीं—

जोगिनने हज़ार कहा मगर कुन्दन राज़ी न हुई कि बग़ैर सूरजमुखी के पूछेहुये जाये मज़बूर होकर जोगिन ने कहा "अच्छा तुम सूरजमुखी से यह बातें समझाकर कहदेना—

मैं और किसीदिन आकर तुम्हें साथ लेजाऊँगी मगर देखो अच्छीतरह कहना सुनना रोधोकर किसी न किसीतरह राज़ी करलेना"—

कुन्दन इसपर भी राज़ी न हुई—मगर जोगिन को हां नहीं कुछ जवाब न दिया—

जोगिन हाथ मुंह धोकर फिर सब औरतों के क़रीब आकर बैठगई—इतनेमें इत्तिफ़ाक़से **सूरजमुखी** उधर आ निकली—सबकी सब सन्नाटे में आगई—

सूरजमुखीने हरीदासी को सरसे पांवतक देखकर पूछा—"तुम कौन"—उस वक्त **नगेन्द्रो** की एक ख़ाला बोलउठी—" यह एक जोगिन है—गाने आई है—कैसा अच्छा गाती है कि वाही वाह—ऐसा गाना कभी काहेको सुनने में आया—तुमभी सुनलो—हरीदासी कोई चीज़ गादे "—

जोगिन ने फिर गाया—सूरजमुखी भी गाना सुनकर खुशहुई—कुछ इनाम देकर रुख़सत किया—जोगिनने चलते चलाते कुन्दन को फिर निगाह भरकर देखा——

दशवां परिच्छेद।

हरीदासी जोगिन गोविन्दपूर से बाहर निकलकर देवीपूर की तरफ़ गई—देवीपूर में एक निहायत नफ़ीस बाग़ीचाथा और उसी बाग़ीचा में एक सजीहुई कोठी—जोगिन इसी बाग़में दाख़िलहुई—वहांसे कोठीके अन्दर जाकर अलाहिदा एक कमरेमें अपने कपड़े उतारने लगी—वह लम्बे २ घूंघरवाले बाल सरसे उतर आये ऊपरसे लगायेहुये बालथे—सारा ज़ेवर उतारडाला मुंह धोया—अब वह जोगिन न थी बल्कि एक नौजवान गबरू—उमर कोई

२५ सालकी मगर दाढ़ी मोछ नदारत—इन्सान खूबरू और सकील—यह नौजवान था कौन—वही देवेन्द्रो—

देवेन्द्रो और नगेन्द्रो एकही खान्दानके थे—मगर दोनोंके बुजुर्गोंमें पटैती थी—एक बड़ा मुक़द्दमा हाईकोरटतक गया—देवीपूरवाले हार गये नतीजा यह हुआ कि उनका इलाक़ा निकलगया—और खर्चा वगैरह की इजराय डिगरी में घरकी पूंजीभी हाथसे गई—देवेन्द्रो का बाप जब मुफ़लिस होगया तो उसने दौलत हासिल करनेकी एक और तदबीर की—उसी ज़िले हरीपूर में एक बड़े इलाक़ेदार गनेशबाबू रहते थे उनके सिर्फ़ एक लड़की हेमवती नामें थी—देवेन्द्रो की शादी हेमवती से की गई हेमवती में बहुतसे औ साफ़थे बदशक्ल बदज़बान—लड़ाका—गुस्ताख़—जब

तक देवेन्द्रो की शादी नहीं हुईथी वह बहुतही नेक चलनथा— यहशादी उसके हक़ में ज़हर होगई देवेन्द्रो ने देखा कि घरमें उसको किसी तरह की खुशी हासिल नहीं होसक्ती—बीबीको बदशक्लपाकर उसको अच्छी सूरतकी ख़्वाहिश पैदाहुई बीबीके भारी २ बोल सुनकर उनको किसी शीरीं ज़बानकी तमन्ना हुई—खुशी तो दरकिनार देवेन्द्रो को घरमें रहने से बड़ी त-कलीफ़ होती थी—एकरोज़ हेमवती ने उससे एक बहुतही सख़्त बातकही— बिचारा देवेन्द्रो बहुत कुछ बरदास्त करचुकाथा—अब ताब न रही— उसने हेमवती का जूड़ा पकड़कर दो चार लातें रसीद कीं—और उसी दिन उसने घर छोड़ दिया—बाग़ीचे में अपने रहने के लिये एक कोठी बनने का हुक्म देकर कल्ल कत्ते चला गया देवेन्द्रो का बाप इसके पेश्तरही मर चुका

था—कलकत्ते जाकर देवेन्द्रो खूब खुल खेला—अपनी तबीयत की पियास बाज़ारी औरतों में जाकर बुझाने लगा—मगर चूंकि पेश्तर से मिज़ाज में सलाहियतथी तो अपनी हरकतों पर खुद शरमिंदह हुआ करता था इस शरमिंदगी के मिटाने के लिये शराब का पीना शुरू किया—

रफ़्तह बद चलनी की आदत पड़गई—तबीयत की झिझक मिटगई—देवेन्द्रो रंगीन मिज़ाज होकर कलकत्ते से पलट आया—नई कोठी भी तय्यार हो गई थी—उसी में रहने लगा—

देवेन्द्रो कलकत्ते से बहुत सी बातें सीख आया था—देवीपूर आकर वह रिफ़ार्मर बना—ब्रह्मोसमाज क़ायम किया—उसमें ताराचरन की तरह अक्सर लोग शरीक़ हुये—

आये दिन लेक्चर हुआ करते थे—लड़कियों के मदर्शह क़ायम करने की तजवीज़ हुई मगर कुछ नतीजा न निकला—विधवावों के बिवाहकी फिकरें होने लगीं—मगर बे कार—परदे की रस्म उठा देने के लिये देवेन्द्रो ने बड़ी सरगर्मी ज़ाहिर की—वजह पाठक समझ सकेहैं—

गोविन्दपूर से पलट कर देवेन्द्रो ने अपना भेस बदला और जाकर अपने बैठक ख़ाने में बैठा एक नौकर हुक्का भर लाया—देवेन्द्रो ने थोड़ी देर तक सारी तकलीफ़ों को दूर करने-वाले तम्बाकू से जी बहलाया जिस मनुष्य ने तम्बाकूकी देवी की पूजा न की उसने दुनिया में कुछ न किया—यह वह देवी है जो दर्दमन्दों को तसकीन—मायूसों को ढारस—ख़ौफ़ज़दों को हिम्मत—बेवकूफ़ों को अक़्ल—गुस्सहवरों को शान्ती—मरीज़ों को सेहत बख़्शतीहै—ऐसारी

दुनियाको खुश करने वाली—बे कारों को मश गूल रखने वाली—मुसीबत ज़दों का गम गलत करने वाली देवी—तेरा बख़्शा हुआ धुंवां धार ताज हमेशह मेरे सरके ज़ेब व ज़ीनत रहे—तेरे साज़ व सामान नारियल—सटक—पेचवान—गुड़गुड़ी—वगैरह के बोसे में हमेशह लिया करूं——

हुक्का पीने से देवेन्द्रो को पूरे तौरपर तसल्ली न हुई—शराब की बोतल खोली गई—पलेटमें क़बाब और कोफ़्ते गज़कके लिये आये—देवेन्द्रो ने शराब पी दो चार साथी तम्बूरा—सितार—और तबलालेकर बैठे—गाना सुनने में देवेन्द्रो का जी न लगा—उन लोगों को रुख़सतकरदिया—

इतने में देवेन्द्रो के मामू का लड़का सुरेन्द्रो वहां आया—सुरेन्द्रो निहायत ही नेक मिजा-

ज़-नेकबख़्त नौ जवान था-देवेन्द्रो अगर किसी को मानता था तो सुरेन्द्रो को दोनों हमसिन थे-और दोनों में बचपन से बहुत दोस्ती थी-सुरेन्द्रो रोज़ शाम को देवेन्द्रो की ख़ैरवाक़ियत पूछजाता था ज़्यादह देरतक न ठहरता था-क्यों कि देवेन्द्रो के बेहूदह कामों में शिरक़त उसे मंज़ूर न थी-

सुरेन्द्रो ने देवेन्द्रो से पूछा- "आज तबीयत कैसी है"-

देवेन्द्रो-अच्छी नहीं-

सुरेन्द्रो-क्यों-क्या हरारत है-

देवेन्द्रो-नहीं-

सुरेन्द्रो-धड़कन का क्या हाल है-

देवेन्द्रो-बदस्तूर-

सुरेन्द्रो-तो इन चीज़ों से परहेज़ही अच्छा था-

देवेन्द्रो–शराब से वह तो जान के साथ है–

सुरेन्द्रो–जान के साथ क्यों–न साथ आई है न साथ जायगी–बहुत लोगों ने शराब छोड़दी–तुम भी छोड़ सक्ते हो–

देवेन्द्रो–जिन लोगों ने शराब छोड़दी उनको और कोई ऐश नसीब हुआ–हमारी फूटी क़िस्मतमें और ऐश कहां–शराब छोड़ें तो किसबिर्त्तेपर–

सुरेन्द्रो–और न सही अपनी जान की सलामती के लिये शराब छोड़ दो–

देवेन्द्रो–जब ज़िन्दगी से आजिज़ हैं तो जानकी क्या फिक्र–हमारा तो मरना अच्छा–

सुरेन्द्रो की आंखों में आंसू भर आये–मुहब्बत भरी आवाज़ से कहा– "अच्छा तो हमारी ख़ातिरसे छोड़ दो–"

देवेन्द्रो की आंखें भी डब डबा आईं—"कहने लगा—" भाई तुम्हारे सिवा कोई भी इस दुनिया में मेरा दोस्त नहीं—न और किसी को मेरी फ़िक्रहै—

अगरकभी मैं शराब छोड़ दूँगा तो तुम्हारी ख़ातिर से—या"—

सुरेन्द्रो—या क्या—

देवेन्द्रो—या जब कभी अपनी बी बी के मरने की ख़बरपाऊंगा—वरना मेरा जीना मरना यकसां है—

बे चारे सुरेन्द्रो से कुछ जवाब न बनपड़ा—अफ़सोस करता हुआ और दिलही दिल में हेमवती को गालियां देता हुआ अपने मकान चला गया—

ग्यारहवां परिच्छेद ॥

सूरजमुखी ने ख़त कमला के नाम लिखा—

" मेरी प्यारी कमला—तुम्हें अशीर्बाद लिखते हुये मुझे शर्म सी मालूम होती है—क्यों कि तुम अब अपने घरकी बड़ी बूढ़ी हो—बाहर हाल जो कुछ हो मैं तुम्हें अब अपनी छोटी बहिन के सिवा और कुछ नहीं ख़्याल कर सक्ती—

मैंने तुम्हें इतना बड़ा किया—क, ख, लिखना सिखाया—मगर अब तुम्हारा अच्छा २ ख़त देखकर मुझे शरम आतीहै कि मैं अपना ख़राब ख़त तुम्हारे पास क्या भेजूं मेरा शरमाना भी बेकार है क्यों कि मैं हूँ ही किस क़ाबिल—अगर किसी क़ाबिलही होती तो इन गतों को क्यों पहुँचती—

किन गतों को—यह बात किसी से कहने की नहीं—कहते हुये रञ्जभी होताहै और शरम भी आतीहै मगर जीका दुःख कहे बग़ैर भी रहा नहीं जाता—कहूँ तो तुम्हारे सिवा और किससे कहूँ—तुम्हीं मेरी प्यारी बहिन हो—दुनियां में सिर्फ़ तुम्हीं मुझसे मुहब्बत करती हो—और फिर तुम्हारे भाईका दुखड़ा—तुम्हारे सिवा और किसी के आगे रोभी नहीं सक्ती—

मैंने अपने हाथों अपने पांव में कुल्हाड़ी मारी—अगर कुन्दन भूखों मर जाती मेरी बला से—मेरी समझपर कैसे पत्थर पड़ गये थे कि मैंने उसे लाकर अपनी छातीपर बिठाला—ईश्वर सारी दुनियां की परवरिश करताहै क्या उसकी खबर न लेता—

तुमने जब उस कमबख़्तको देखाथा वह कम उमर थी—अब जवान जहां कोई सत्तरह अट्ठारह

बरस की हुई—मैंने माना कि वह खूबसूरत है—मगर हाय—यही खूबसूरती मेरे लिये मौत है—

दुनियां में अगर मुझे कोई सुख है तो स्वामी से—अगर कोई चिन्ता है तो स्वामी की—अगर मेरी कोई पूंजी है तो वही स्वामी—हाय—कुन्दन उस स्वामी को मुझसे छीने लेती है—दुनियां में अगर मुझे किसी चीज़ की अभिलाष है तो अपने स्वामी के स्नेह की—मगरहाय—कुन्दन उस स्नेह से अलग किया चाहती है—

तुम अपने भाई को बुरा न कहना—मैं उनकी शिक़ायत नहीं करती—उनकासा नेक आदमी होना मुशकिल— मैं आये दिन देखती हूँ कि वह बहुत कुछ ज़ब्त करते हैं—जिधर कुन्दन होतीहै उधर वह अपनी खुशी से आंख उठाकर नहीं देखते—जबतक कोई ऐसी

ही ज़रूरत न हो उसका नाम ज़बान पर नहीं लाते-बल्कि उसके साथ निहायत रुखाई से पेश आतेहैं-यहां तक कि अक्सर बेक़सूर भी उसे झिड़क देतेहैं-

तो फिर मैं हौलों के मारे क्यों मारी जाती हूँ-अगर कोई मर्द इस बात को पूछता तो उसको समझाना बहुतमुशकिल होता-मगर तुम औरतज़ात-खुदही समझगई होगी-अगर उनकी निगाहों में कुन्दन भी और औरतों की तरह होती तो उसकी तरफ़ न देखने के लिये इतनी कोशिश क्यों-उसका नाम ज़बान पर न लाने के लिये इतनी फ़िक्र क्यों-कुन्दन की वजह से वह अपने नज़दीक आप क़सूरवारहैं- तभी तो कभी २ उसपर ख़फ़गी ज़ाहिर करतेहैं-वह गुस्सह उसपर नहीं अपने ऊपर है-वह झिड़की उसके लिये

नहीं अपने लिये है—मैं इन बातों को खूब समझती हूँ—मैंने इतने दिनों उन्हीं की आंखें देखीं—उनकी परछाईं देखकर उनके दिलका हाल बता सक्की हूँ—भला वह मुझसे कोई बात क्यों कर छिपा सक्के हैं—अक्सर उन्हें ख़्याल नहीं रहता और उनकी निगाहें इधर उधर फिरती हैं—किसकी तलाश में—?क्या मैं यह समझ नहीं सक्की—और जब कुन्दन पर नज़र पड़जाती है तो घबराकर आंखें क्यों फेर लेते हैं—क्या मैं यह समझ नहीं सक्की—किस के गले की आवाज़ सुनने के लिये वह खाते वक़्त आबखोरा हाथ में लिये हुये कान खड़े रखते हैं—क्या मैं यह समझ नहीं सक्की—हाथ का निवाला हाथमें रहताहै—खाना क्या चाहिये खाते क्या हैं—तब भी कान आहट पर रहतेहैं—क्यों—?और फिर कुन्दन

की आवाज़ सुनकर जल्द २ खाने क्यों लगते हैं—क्या मैं यह समझ नहीं सक्की—और हमेशह हँस २ कर बातें किया करते थे—मगर आज कल न मालूम ध्यान कहां रहता है—कोई बात कहो तो बेसुने हुये कह देते हैं हूँ"—अगर मैं ख़फ़ा होकर कहती हूँ "मुझे जल्द मौत आये"— तो बे सुने हुये कह देते हैं—"हूँ"— यह खुद फरामोशी क्यों? अगर पूछो तो कहते हैं कि मुक़द्दमे की फ़िक्र है—मगर मुझे मालूम है कि कोई मुक़द्दमा उनको इसक़दर परेशान नहीं करसक्का—एक बात और सुनो—एक रोज़ घरकी बड़ी बुढ़ियां कुन्दन के रंडापेकाज़िक्रकरके अफ़सोसकररहीथीं—तुम्हारे भाई भी उस वक्क वहां मौजूद थे—मैंने परदे से देखा कि उनकी आंखोंसे आंसू छलक आये और वह घबराये हुये उठकर बाहर चले गये—

मैंने इधर एक औरत नौकर रक्खी है–उ-सका नाम कुमूद–बाबू उसे कुमूद कह कर पुकारते हैं–कभी २ कुमूद को पुकारतेहुये मुँहसे "कुन्द"–निकल जाता है–और बाबू सिटपिटा जाता है–यह सिटपिटा जाना क्यों?–

मैं यह नहीं कह सक्ती कि वह मेरी ख़ातिर नहीं करते–बल्कि अब पहले से ज़्यादह मेरी ख़ातिर करते हैं–मैं इसका सबब भी समझती हूँ–बात यहहै कि वह दिलही दिलमें मेरे सामने क़सूरवारहैं–मगर साथही यह भी समझ सक्तीहूँ–कि अबउनके दिलमें मेरी जगह नहीं–ख़ातिरदारी और चीज़है–मुहब्बत औरचीज़–हमलोग औरत ज़ात यह बातें खूब समझतेहैं–

और हँसी की बात सुनाऊँ–ईश्वर चन्द्र बिद्या सागर कलकत्ते में कोई बड़े पण्डित मशहूर हैं–उन्होंने कोई किताब लिखीहै जिसमें

यह दिखायाहै कि रांड़ों का ब्याह फिर हो सक्ता है—मैं कहती हूँ कि अगर ऐसा आदमी बड़ा पंडितहै तो दुनियां में जाहिल कौन होगा आज कल बाबू के बैठके में बहुत से पंडित जमा होकर उस किताबपर बहस किया करते हैं—एक पंडित ने उस किताब की बहुत तरफ़दारी की—बाबूने उसको चन्दे के बहाने १०)रुपये दिये—एक दूसरे पंडित ने उस किताब के ख़िलाफ़ बहुत कुछ कहा मैंने उसकी लड़की के लिये ५ तोले सोना भेजवा दिया—अब कोई पण्डित उस किताब की बहुत तरफ़दारी नहीं करता—

तुम अपने जी में कहती होगी कि कहां का दुखड़ा लेकर बैठीं—हाय बहिन—अगर तुम से न कहूँ तो किससे कहूँ—मगर देखो बहिन इन बातों का ज़िक्र किसीसे न करना—तुम्हें मेरे शिरकी क़सम यह ख़त नन्दोई को न दिखाना—

बहिन एकमर्तबा आकर सबको देख जाओ-अगर इस ज़माने आईं तो मेरा रंज बहुत कुछ कम होजायगा-अपने बच्चे को मेरी तरफ़ से बहुत २ प्यार करना-और नन्दोई बाबू का हाल लिखना-फ़क़त-"सूरज मुखी"-

कमला ने जवाब में लिखा-

"तुम्हें तो ख़फ़्त हो गया है-नहीं तो अपने स्वामी की तरफ़ से इतनी बे एतबार क्यों होतीं-अगर किसी तरह उनका एतबार न करसको तो तालाब में डूबमरो-मैं कमलामती हुक्म लगाती हूँ कि तुम गले में कलसी बांधकर तालाब में डूब सक्तीहो-जिसको अपने स्वामी का एतबार न रहा उसका मरनाही अच्छा"-

बारहवां परिच्छेद ॥

नगेन्द्रो की हालत रोज़ बरोज़ ख़राब होती जाती थी—साफ़सफ़्फ़ाफ़ आसमानपर बादल दिखाई पड़े—सूरजमुखी के आंसू छलक आये मगर उसने अपने आँचल से पोंछ डाले—

सूरजमुखी अपने दिलही दिलमें सोचने लगी—"मैं कमला की रायपर चलूंगी—मैं अपने स्वामीका एतबार क्यों न करूँ—उनका दिल पहाड़है टल नहींसक्ता मेरीही भूलहै—हो न हो उनको कोई बीमारी है"—सूरजमुखी ने बालूकी दीवार खड़ी की—

नगेन्द्रो के यहां एक डाक्टर भी नौकरथा—सूरजमुखीने उसको बुलाया और एक औरत के ज़रिये से ये बातें कीं—

सूरजमुखी—बाबूकी तबीयत अच्छी नहीं है—कुछ दवाई क्यों नहीं देते—

डाक्टर—मुझे तो उनकी बीमारीका हाल नहीं मालूम—

सूरजमुखी—क्या बाबूने कुछ हाल नहीं बयान किया—

डाक्टर—कुछनहीं—आख़िर मर्ज़ क्याहै—

सूरजमुखी—मर्ज़का हाल मैं बतासक्तीहूँ—तुम डाक्टर हो तुम जानसक्तेहो—

डाक्टर (मुताज्जिबहोकर) मैं अभी जाकर पूछता हूं—

डाक्टर—उठकर चला—सूरजमुखीने फिर बुलाकर कहा—"बाबूसे बीमारीका हाल न पूछना—उनके लिये दवाई भेजदो"—

डाक्टरने दिलमें सोचा कि इसतौरपर तो ख़ूब इलाजहोगा—अच्छा कहकर वहांसे चलदिये—

दवाई ख़ाने में जाकर थोड़ासा सोडा—थोड़ी सी पोर्ट वाइन—थोड़ीसी कुनैन मिलाकर एक शीशी तय्यार की और उसपर निशान बनाकर हिदायत लिखदी कि दिनमें दो मर्तबह पीजाये—और सूरजमुखीके पास भेजदी—सूरजमुखी दवा पिलानेगई— नगेन्द्रो ने शीशी अपने हाथमें ली—पढ़कर देखा—उधरसे बिल्ली जारही थी वह शीशी उस बिल्ली के फेंकमारी—सूरजमुखी यह देखकर कहनेलगी—"दवा न खावो—मगर यह तो बताओ कि बीमार क्याहो"—

नगेन्द्रोने तीखेपनसे जवाब दिया"बीमारी कैसी"—

सूरजमुखी—ज़रा सूरततो देखो कि क्या हाल होगयाहै—

यह कहकर सूरजमुखी एक आईना उठा

लाई-नगेन्द्रो ने उसके हाथसे आईना लेकर देपटका-आईना चूर २ होगया-

सूरजमुखी की आंखोंसे टप २ आंसू गिर पड़े-यह देखकर नगेन्द्रो वहांसे उठगया-बाहर जाकर एक नौकर को बेक़सूर मारा-उसकी चोट का सदमा सूरजमुखी को पहुँचा-

अबतक नगेन्द्रो का मिजाज बहुत सीधा था-मगर अबतो बात.२ पर गुस्सह है-

सिर्फ़ गुस्साही नहीं-एकरोज़ रातको खाने का वक्त गुज़रगया-मगर नगेन्द्रो खाने के लिये अन्दर मकान में न आया-सूरजमुखी इन्तिज़ार में बैठी रही-रात ज़्यादह आगई-बहुत रातगये नगेन्द्रो आया-मगर चेहरा सुर्ख़-आँखें लाल-नगेन्द्रो ने शराबपी-आजतक कभी न पी थी- यह हालत देखकर बेचारी सूरजमुखी और भी परेशान हुई-

उसरोज़ से नगेन्द्रो का वही मामूल हो-गया—एकदिन सूरजमुखी ने नगेन्द्रोके दोनों पांव पकड़े—और आनेवाले आंसुओं को बमु-शकिल रोककर कहा—"मेरा इतना कहना मानों—इसे छोड़दो"—नगेन्द्रो ने कहा—"इस में हर्जही क्याहै" इसका जवाब सूरजमुखी क्या देसक्कीथी—कहनेलगी—"हर्ज का हाल मुझे क्या मालूम—जो बात तुम नहीं जानते वह मैं भी नहीं जानती—मगर मेरी ख़ातिर से छोड़दो"—

नगेन्द्रोने जवाबदिया "सूरजमुखी मैं शराबीहूँ—तुम्हारा जी चाहे तो शराबी से मिलो न जी चाहै न मिलो मुझे इसकी परवाह नहीं"—

सूरजमुखी कमरे से बाहर चली गई—क्योंकि जिसरोज़ वह नौकर मारा गया था

उसदिन से सूरजमुखी ने अहद करलियाथा कि अब नगेन्द्रो के सामने आंसू न बहायेगी-

देवानजीने भी सूरजमुखी से कहला भेजा था कि इलाक़े की ख़ैर नहीं—बाबू कुछ नहीं देखते—तहसीलदार लोग इलाक़ा लूटे खाते हैं—सूरजमुखी ने जवाबमें कहला भेजा कि जिनका इलाक़ाहै वही उसको सँभाल सक्केहैं—अगर वह नहीं संभालते तो तबाह होनेदो—इसके पेश्तर कुल इलाक़े की निगरानी ख़ुद नगेन्द्रो करताथा—

एकरोज़ तीन चारहज़ार असामी हाथ जोड़ेहुये नगेन्द्रोकी कचेहरी में हाज़िरहुये—और दोहाई देनेलगे—कि तहसील्दारों नें लूट लिया—नगेन्द्रोने हुक्मदिया कि सबको निकाल दो—

इसके पेश्तर एक मर्तबः एक ज़िलेदार ने

किसी आसामी को मारकर उससे एक रुपयाले लिया था—नगेन्द्रो ने उस ज़िलेदार की तनख़्वाह से १०) रुपये लेकर उस असामी को दिलवा दिया था—

नगेन्द्रो के दोस्त हरदेवने ख़तमें लिखा—"न मालूम तुम्हें हुवा क्या है—और तुम करते क्याहो—अव्वल तो महीनों ख़तही नहीं भेजते—अगर ख़तभी लिखतेहो तो उसका सर पैर कुछ समझमें नहीं आता क्यों भाई क्या ख़फ़ाहो—आख़िर बताओ तो कि हुआ क्या—और कुछ न सही अपनी ख़ैरवाफ़ियत तो लिखो"—

नगेन्द्रोने जवाबमें लिखा—"भाई मुझसे खफ़ा न होना—मैं जहन्नुम रसीद होने वाला हूँ"—

हरदेव बहुत अक़्लमन्द आदमी था—ख़त

पढ़कर सोचने लगा–"यह है क्या–कोई बड़ी फ़िक्रहै किसी दोस्तसे जुदाई हुई–या किसी बड़े दुश्मन ने सताया–नहीं–यहतो इश्क ख़ाना ख़राब मालूम होताहै"–

कमला के पास सूरजमुखी का एक और ख़त पहुँचा–आख़िर में यह मज़मूनथा–

"एक मरतबा यहां आजाओ–मेरी प्यारी कमला–मेरी प्यारी·प्यारी बहिन–तुम्हारे सिवा इस दुनियां में मेरा कोई नहीं– एक मर्तबा यहां आजाओ"–

तेरहवा परिच्छेद ॥

कमला के दिलमें अंदेशह,–पैदाहुआ– अब बग़ैर गयेहुये रहा नहीं जाता–कमला कीसी मुहब्बती औरतहोना मुशकिल–ख़त पढ़कर अपने स्वामी के पास गई–

श्रीशचन्द्र ज़नाने मकान के एक कमरे में बैठाहुवा दफ़्तरका कुछ हिसाब देखरहाथा उस के क़रीब बैठाहुआ सालभरका बच्चा सतीश अंगरेज़ी अख़्बार की सैर कररहा था—पहिले उसने कोशिशकी कि उस क़ाग़जको मुँहमें रखले मगर कामयाबी न हुई—फिर उस काग़ज़ को बिछाकर उसपर बैठगया—

कमला अपने स्वामी के क़रीब गई और दोनों हाथ जोड़कर कहनेलगी— "सलाम पहुँचै हुज़ूर"—

"हुज़ूर" उसके एकरोज़ पेश्तर दोनों मियां बीबी ने एक नाटक पढ़ाथा जिसमें किसी रियासत के कोतवालने इसीतरह सलाम करके किसी चोरी का हाल अपने हाकिम से बयान किया था—

श्रीश—(हँसकर) क्यों—क्या कहीं चोरी होगई ?—

कमला—बड़ी भारी चोरी होगई—

श्रीश—कहां ?—

कमला—गोविन्दपूर में—भाई के पास एक सोने की डिबिया में कानी कौड़ी थी। उसे कोई उड़ालेगया—

श्रीश—तुम्हारे भाई के सोनेकी डिबियातो उनकी सूरजमुखी हैं—मगर यह कानी कौड़ी कौन है—

कमला—सूरजमुखी की अक्ल—

श्रीश— तभी जुवारीलोग कानी कौड़ी से खेलतेहैं—सूरजमुखी ने इसी कानी कौड़ीकी बदौलत तुम्हारे भाई को जीतलिया—कौड़ी को चुरा कौन लेगया ?—

कमला—इसका हाल नहीं मालूम—मगर ख़त देखने से मालूम होताहै कि कानी कौड़ी खोगई—नहींतो वह ऐसा ख़त क्यों लिखतीं—

श्रीश—क्या मैं उस ख़तको देखसक्ता हूँ—

कमला ने सूरजमुखी का ख़त श्रीशचन्द्र के हाथमें देकर कहा—"यह लो—पढ़ो—

सूरजमुखीने लिखभेजाथा कि मैं तुमसे कुछ हाल न कहूँ—अबतक तुमसे मैंने छिपाया ज़रूर मगर मेरा दिल न मालूम किसक़दर परेशान रहताथा—मुझसे यह नहीं होसक्ता कि तुमसे कोई बात छिपाऊँ"—

श्रीशचन्द्र ने कुछ सोचकर जवाब दिया—"अगर सूरजमुखीने मना कियाहै तो मैं उन का ख़त न देखूँगा और न पूछूँगा कि बात क्याहै—बस यह बताओ कि अब करना क्या होगा"—

कमला—करना यह होगा कि सूरजमुखी की अक्ल जातीरही है उनको थोड़ीसी अक्ल देना चाहिये—मगर अक्ल दे कौन सक्ता है—अगर अक्ल किसीमें है तो शतीश बाबूमें—इसीलिये सूरजमुखी ने शतीश बाबूको वहां बुलायाहै—

शतीश ने उसवक्त एक गुल्दान उलट दियाथा—और गुल्दान उलटने के बाद दवात पर नज़र डालरहा था—यह देखकर श्रीशबाबू ने कहा—"इसमें क्या शक—यह तो बड़े अक्ल देनेवाले हैं—

बहर हाल जो कुछ हो अब मैं समझा—भाभी ने बुलवा भेजाहै—

शतीश के साथ तुम्हारी भी दावत है"—

कमला—तुम्हेंभी तो बुलायाहै—

श्रीश—क्यों मुझे क्यों बुलाया ?—

कमला—नहीं तो क्या मैं अकेली जाऊँ-गी—मेरे साथ लोटा आबख़ोरह लेकर कौन जायगा ?—

श्रीश—सूरजमुखी की भी क्या बातें हैं इस ज़रासे कामके लिये मुझे तकलीफ़ दी—अगर नन्दोई इसी काम के लियेहै तो दोदिन के लिये मैं और कोई नन्दोई उनके लिये त-लाश करदूँगा—

कमला बहुत बिगड़ी—नाक भौं चढ़ाकर श्रीश को धक्का दिया—जो क़ाग़ज़ वह लिख रहाथा उसे फारडाला—श्रीश हँसकर बोला—"फिर मेरे मुँह क्यों लगतीहो"—

कमलाने झूठ मूठ का ग़ुस्सा ज़ाहिर कर के कहा—"मेरी ख़ुशी—हज़ारों दफ़ः तुम्हारे मुँह लगूँगी"—

श्रीश—अच्छा तो फिर सुनोगी भी—

कमलाने घूंसा ताना–श्रीश ने उठकर उसका जूड़ाखोलदिया–कमला ने दवातकी रोशनाई उगाल्दान में फेंकदी–श्रीशनेकमला के दोनों हाथ थामकर उसका मुँह चूमलिया–

यह देखकर शतीश का जी भी कुलबुलाया–वह समझता था कि प्यार उसी का हिस्सा है–जब देखा कि कमला उसका हिस्सा बटाये लेतीहै तो हुमककर खड़ा होगया और मां के पांव पकड़कर उसके मुँहकी तरफ़ देखनेलगा–मां ने झपटकर गोद में उठालिया और खूबसा प्यार किया–मांकी गोदसे श्रीश ने अपनी गोदमें लिया और बार२ मुँहचूमा–गर्ज़ कि शतीश ने बीचमें परकर मियां बीबी की लड़ाई मौकूफ़ करादी–

श्रीश ने पूछा "अच्छा तो सच २ बताओ